प्रेम बानी भाग 3 ॥ पेज 281 ॥ आज आयी बहार बसन्त	
हिंदी	संस्कृत
आज आई बहार बसंत । उमँग मन गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥	अद्य समागतः ऋतुराजवसन्तः । उल्लसितं मनः गुरुचरणयोः लिप्लिम्पति ॥ १ ॥
दया धार गुरु जग में आए । भक्ती की फुलवार खिलाय ॥ २ ॥	दयां धृत्वा गुरुः जगति आगतवान् । भक्तेः फुलझरीं विकसयन्ति ॥ २ ॥
प्रेम बदरिया बरषा लाई । नइ नइ धुन घट शब्द सुनाय ॥ ३ ॥	प्रेमवारिदः वृष्टिं आनीतवान् । घटे नवाः नवाः शब्दध्वनयः श्रूयन्ते ॥ ३ ॥
सभी सुहागिन खेलन आईं । गुरु सँग अचरज फाग रचाय ॥ ४ ॥	सर्वाः सुभगाः क्रीडितुं आगतवत्यः । गुरुणा सह अद्भुतां फाल्गुनक्रीडां रचयितुम् ॥ ४ ॥
तन मन धन की धूल उड़ावत । प्रेम प्रीति का रंग घुलाय ॥ ५ ॥	तनुमनधुनानां धूलिं उड्डापयन्ति । प्रेमप्रीत्योः रंगं रञ्जयन्ति ॥ ५ ॥
गुरु चरनन पर बारम्बारा । डार डार रँग हिये हरखाय ॥ ६ ॥	पुनः पुनः गुरुचरणयोः । रंगं क्षिप्य क्षिप्य हृदये हर्षेण मोदन्ते ॥ ६ ॥
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से । इक इक अपना काज बनाय ॥ ७ ॥	गुरोः भक्तेः दानरूप फाल्गुनोपायनं गृहीतम् । एकैकं स्व कार्यं सिद्धयति ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला । सब को लिया निज चरन लगाय ॥ ८ ॥	रा धा/धः स्व आ मी दीनदयालवः कृपालवश्च । सर्वाः स्वचरणयोः अलगन् ॥ ८ ॥